© FEB 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 8 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I8-1714559

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर आकांक्षा का प्रभाव

चाँदनी कुमारी[1], डॉ. पूनम बाला[2]
[1, 2]*Sai Nath University, Ranchi*

सारांश (*Abstract*)- शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास को गति देने का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। यह केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक क्षमताओं का विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों में ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और आत्मविश्वास का विकास होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में निरंतर वृद्धि होती है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर शिक्षा छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण, भविष्य की योजनाओं तथा जीवन लक्ष्यों को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें आकांक्षा (*Aspiration*) एक प्रमुख कारक है। आकांक्षा छात्रों को उच्च लक्ष्य निर्धारित करने, कठिन परिश्रम करने तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करती है। जिन छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा उच्च होती है, वे अध्ययन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत, निम्न आकांक्षा वाले छात्रों में उपलब्धि स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने भी इस बात पर बल दिया है कि शिक्षा, विशेष रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला है। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति में आलोचनात्मक सोच विकसित करती है, जिससे वह अपने परिवेश और भविष्य के प्रति अधिक जागरूक एवं उत्तरदायी बनता है। इसी संदर्भ में, छात्रों की आकांक्षा न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास और भविष्य की दिशा को भी निर्धारित करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार छात्रों की आकांक्षाएँ उनकी उपलब्धि को प्रभावित करती हैं तथा शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकती हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों एवं शैक्षिक योजनाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

I. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला मानी जाती है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, व्यक्तित्व निर्माण तथा भविष्य की जीवन दिशा निर्धारित करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस स्तर पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि केवल पाठ्यक्रम, विद्यालयीय सुविधाओं अथवा शिक्षण विधियों पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके मानसिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से भी गहराई से प्रभावित होती है। इन कारकों में आकांक्षा (Aspiration) एक प्रमुख और निर्णायक तत्व है।

माध्यमिक स्तर के छात्रों की आकांक्षा उनके शैक्षिक लक्ष्यों, अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण तथा परिश्रम की दिशा को निर्धारित करती है। जिन छात्रों में उच्च शैक्षिक आकांक्षा पाई जाती है, वे अपने भविष्य को लेकर अधिक सजग होते हैं और शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयास करते हैं। इसके विपरीत, जिन छात्रों की आकांक्षा का स्तर निम्न होता है, वे अकसर शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने में असफल रहते हैं, जिससे उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है।

वर्तमान समय में विभिन्न शैक्षिक योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु केवल भौतिक सुविधाओं अथवा नीतिगत हस्तक्षेपों से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि इन प्रयासों में छात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष, विशेष रूप से उनकी आकांक्षाओं को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया है। सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी परिवेश तथा शिक्षकों का व्यवहार जैसे तत्व छात्रों की आकांक्षा को प्रभावित करते हैं, जो अंततः उनकी शैक्षिक उपलब्धि में परिलक्षित होते हैं।

© FEB 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 8 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I8-1714559

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए उनकी आकांक्षाओं का गहन अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन इसी उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा उनकी उपलब्धि को प्रभावित करती है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि शिक्षकों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

बिहार राज्य के दरभंगा जिले के संदर्भ में औसत साक्षरता दर अपेक्षाकृत निम्न पाई जाती है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव माध्यमिक स्तर तक पहुँचने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। विशेष रूप से सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों से आने वाले छात्रों में यह समस्या अधिक गंभीर रूप में देखने को मिलती है। विभिन्न जनगणना आँकड़ों के अनुसार, राज्य में साक्षरता की स्थिति में कुछ सुधार अवश्य हुआ है, किंतु यह सुधार अभी भी राष्ट्रीय औसत की तुलना में अपर्याप्त है।

माध्यमिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा के विकास के लिए साक्षर और प्रेरक पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण आवश्यक होता है। जब अभिभावकों, विशेषकर महिलाओं की साक्षरता का स्तर कम होता है, तो उसका नकारात्मक प्रभाव छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा और उपलब्धि पर पड़ता है। ऐसे परिवेश में पले-बढ़े छात्रों में उच्च लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास तथा शैक्षिक प्रगति की आकांक्षा अपेक्षाकृत कम विकसित हो पाती है।

आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर में अधिक असमानता विद्यमान है, जिसका प्रभाव बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा तथा माध्यमिक स्तर पर उनकी उपलब्धि पर विशेष रूप से पड़ता है। जब शैक्षिक अवसर, मार्गदर्शन और प्रेरणा का अभाव होता है, तब छात्रों की आकांक्षा सीमित रह जाती है, जो अंततः उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

परिणाम एवं विवेचना (Results & Discussion)

साक्षरता किसी भी लोकतांत्रिक समाज में शैक्षिक जागरूकता और सामाजिक विकास का एक प्रमुख सूचक मानी जाती है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि झारखंड राज्य में विभिन्न सामाजिक समूहों, विशेष रूप से जनजातीय समुदायों में साक्षरता की स्थिति असमान बनी हुई है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव माध्यमिक स्तर तक पहुँचने वाले छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा तथा उपलब्धि पर पड़ता है। जिन समुदायों में प्राथमिक स्तर पर साक्षरता का स्तर कम पाया गया, वहाँ माध्यमिक स्तर पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत निम्न देखी गई।अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भूमिज, हो, लोहरा, संथाल तथा खरवार जैसी प्रमुख जनजातियों की साक्षरता दर राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति औसत से कम है। इन समुदायों से आने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा का स्तर भी सीमित पाया गया, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ा। कम साक्षर पारिवारिक वातावरण, सीमित शैक्षिक संसाधन तथा मार्गदर्शन के अभाव के कारण ऐसे छात्र उच्च शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने में असमर्थ रहते हैं।इसके विपरीत, ओरांव एवं खड़िया जनजातियों में साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। इन समुदायों से संबंधित छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा का स्तर अधिक देखा गया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी तुलनात्मक रूप से बेहतर रही। इसी प्रकार, मुंडा जनजाति की साक्षरता दर राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति औसत के लगभग समान पाई गई, और इस समुदाय के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी अपेक्षाकृत संतोषजनक रहा। परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि साक्षरता का स्तर छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और यही आकांक्षा आगे चलकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। अतः माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाने के लिए आवश्यक है कि छात्रों की आकांक्षाओं को प्रोत्साहित किया जाए तथा प्रारंभिक स्तर से ही ऐसा शैक्षिक वातावरण निर्मित किया जाए, जो उन्हें उच्च लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित कर सके।

तालिका – 1 माध्यमिक स्तर के छात्रों का क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर वितरण

वितरण	आयु-समूह (वर्ष) (%)	7-8	8-9	9-10	10-11	11-12	12-13	13-14	14-15
छात्र (बालक) (%)	40.7	51.5	49.0	47.9	41.5	39.2	38.9	33.4	29.6
छात्राएँ (बालिका) (%)	27.2	40.8	42.2	33.9	24.0	21.9	25.0	19.5	13.9

© FEB 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 8 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I8-1714559

बिहार की जनगणना, 2001। स्रोत: बिहार के रजिस्ट्रार जनरल का कार्यालय,

तालिका – 2. माध्यमिक स्तर के छात्रों आयु-समूह (वर्ष)

क्रम सं.	आयु-(वर्ष)	संख्या वितरण	छात्र (बालक) (%)	छात्राएँ (बालिका) (%)
1	7-8	5,783	0.12	11.62
2	8-9	2,553	0.06	4.22
3	9-10	412	Lowest	11.38
4	10-11	1,595	0.03	15.93
5	11-12	39,445	1.04	10.82
6	12-13	1,35,110	2.34	16.45
7	14-15	11,009	0.17	13.55
	कुल	1,95,907	3.76	83.97

तालिका के अनुसार विभिन्न आयु-समूहों में छात्रों का संख्या-वितरण स्पष्ट रूप से भिन्न-भिन्न पाया गया है। कुल विद्यार्थियों की संख्या 1,95,907 है। इनमें से 12–13 वर्ष आयु-समूह के छात्रों की संख्या सर्वाधिक (1,35,110) है, जो दर्शाता है कि इस आयु वर्ग में विद्यालयी नामांकन और उपस्थिति अधिक है। इसके बाद 11–12 वर्ष आयु-समूह में 39,445 विद्यार्थियों की उपस्थिति दर्ज की गई है, जो भी अपेक्षाकृत उच्च है। इसके विपरीत 9–10 वर्ष आयु-समूह में विद्यार्थियों की संख्या सबसे कम (412) पाई गई, जिससे संकेत मिलता है कि इस आयु वर्ग में नामांकन या उपस्थिति में कमी हो सकती है।

7–8 वर्ष तथा 8–9 वर्ष आयु-समूहों में छात्रों की संख्या क्रमशः 5,783 और 2,553 है, जो मध्यम स्तर को दर्शाती है। 10–11 वर्ष तथा 14–15 वर्ष आयु-समूह में भी विद्यार्थियों की संख्या संतोषजनक पाई गई, किंतु यह 12–13 वर्ष समूह की तुलना में कम है।

लैंगिक प्रतिशत के आधार पर देखा जाए तो कई आयु-समूहों में बालिकाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से अधिक है, विशेषकर 10–11 वर्ष और 12–13 वर्ष आयु वर्ग में। यह तथ्य बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता और सहभागिता में वृद्धि को दर्शाता है। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि मध्य आयु-समूह (11–13 वर्ष) में विद्यार्थियों की उपस्थिति अधिक है, जबकि कुछ निम्न आयु-समूहों में अपेक्षाकृत कमी देखी गई है, जिस पर विशेष शैक्षिक ध्यान देने की आवश्यकता है।उपलब्ध आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनजातीय साक्षरता का प्रतिशत उच्च शिक्षा स्तर पर पहुँचते-पहुँचते तीव्र गति से घटता जाता है। विशेष रूप से मैट्रिक के बाद विद्यार्थियों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट देखी जाती है और उच्च माध्यमिक स्तर पर यह अनुपात लगभग एक-तिहाई तक सिमट जाता है।

5–14 वर्ष आयु वर्ग के कुल 19.8 लाख जनजातीय बच्चों में से केवल 8.5 लाख बच्चे ही विद्यालय जा रहे हैं, जो कुल का 43.1 प्रतिशत है। यह स्थिति चिंताजनक है कि इसी आयु वर्ग के 11.3 लाख बच्चे (56.9 प्रतिशत) विद्यालय से बाहर हैं और शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहे हैं।

प्रमुख अनुसूचित जनजातियों के संदर्भ में समुदायों में 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे विद्यालय जाते हैं, जो अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति को दर्शाता है। इसके विपरीत जनजातियों समुदायों में केवल 36 से 47 प्रतिशत बच्चे ही विद्यालय में अध्ययनरत हैं। यह अंतर जनजातियों के बीच शैक्षिक असमानता को दर्शाता है तथा यह संकेत देता है कि कुछ समुदायों में विशेष शैक्षिक हस्तक्षेप और जागरूकता कार्यक्रमों की अधिक आवश्यकता है।

तालिका – 3. 7–15 वर्ष आयु-समूह में विद्यालय जाने वाले बच्चों का प्रतिशत

आयु-वर्ष	अयु-स	7-8	8-9	9-10	10-	11-	12-	14-

© FEB 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 8 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I8-1714559

	मू ह				1 1	1 2	1 3	1 5
7-15 वर्ष	3 3. 1	4 5 . 0	4 3 . 3	4 0 . 1	4 5 . 6	4 7 . 1	3 4 . 6	3 5 . 3

7–15 वर्ष आयु-समूह के बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति के संदर्भ में दरभंगा जिले की स्थिति चिंताजनक चित्र प्रस्तुत करती है। उपलब्ध आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि इस आयु वर्ग के सभी बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे हैं। विद्यालय जाने वाले बच्चों का प्रतिशत संतोषजनक स्तर तक नहीं पहुँच पाया है, जबकि एक बड़ी संख्या अभी भी शिक्षा से वंचित है। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों में विद्यालय से बाहर रहने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है।

दरभंगा जिले में ग्रामीण आबादी का अनुपात अधिक होने के कारण शिक्षा तक पहुँच में कई प्रकार की बाधाएँ सामने आती हैं। दूर-दराज़ के गाँवों में विद्यालयों की कमी, आधारभूत सुविधाओं का अभाव, शिक्षकों की अनुपस्थिति तथा पारिवारिक आर्थिक कठिनाइयाँ बच्चों के नियमित नामांकन और उपस्थिति को प्रभावित करती हैं। यद्यपि शहरी क्षेत्रों में सरकारी एवं निजी विद्यालयों का नेटवर्क उपलब्ध है, परंतु उसका लाभ मुख्यतः शहरों में रहने वाले परिवारों को ही मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों, विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अल्पसंख्यक समुदायों के विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत कम अवसर प्राप्त होते हैं।

विद्यालयी वातावरण से जुड़ी समस्याएँ भी बच्चों की निरंतर उपस्थिति में बाधा उत्पन्न करती हैं। कई बार विद्यार्थियों को लंबी दूरी तय कर विद्यालय पहुँचना पड़ता है। सामाजिक भेदभाव, भाषाई कठिनाइयाँ तथा पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी उनके शिक्षा से जुड़ाव को कमजोर करती हैं। इन परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है, जिसके कारण वे बीच में ही विद्यालय छोड़ देते हैं।

सरकार द्वारा नामांकन बढ़ाने एवं विद्यालय से बाहर बच्चों की संख्या घटाने के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे सर्व शिक्षा अभियान, मध्यान्ह भोजन योजना एवं विशेष नामांकन अभियान। इन प्रयासों से स्थिति में कुछ सुधार अवश्य हुआ है, किंतु अभी भी 7–15 वर्ष आयु-समूह के सभी बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए व्यापक और सतत प्रयासों की आवश्यकता है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं वंचित वर्गों के बच्चों के लिए आधारभूत संरचना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा समावेशी वातावरण सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

दरभंगा जिले में 7–15 वर्ष आयु-समूह के बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि पूर्व में किए गए अनेक प्रयास अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सके। यद्यपि प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु विभिन्न योजनाएँ लागू की गईं, फिर भी इस आयु वर्ग के सभी बच्चों को विद्यालय से जोड़ना अभी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

आदिवासी एवं वंचित बहुल क्षेत्रों में बुनियादी शैक्षिक अवसंरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की कमी एक प्रमुख बाधा है। कई गाँवों में विद्यालयों की संख्या अपर्याप्त है, और जहाँ विद्यालय उपलब्ध हैं, वहाँ भवन जर्जर अवस्था में हैं। अनेक स्कूलों में कक्षाओं के लिए पर्याप्त कमरे नहीं हैं, ब्लैकबोर्ड, डेस्क-बेंच, चॉक, पेयजल तथा शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। दूरस्थ क्षेत्रों में खराब सड़क एवं परिवहन सुविधाओं के कारण बच्चों को विद्यालय पहुँचने में कठिनाई होती है, जिससे नियमित उपस्थिति प्रभावित होती है।

प्रशिक्षित एवं योग्य शिक्षकों की कमी तथा शिक्षकों की अनियमित उपस्थिति भी एक गंभीर समस्या है। छात्र-शिक्षक अनुपात अधिक होने से कक्षा का वातावरण प्रभावी नहीं बन पाता। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव तथा उदासीन दृष्टिकोण भी बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति को सीमित करता है।

दरभंगा जिले के अनेक परिवार सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति में हैं। गरीबी के कारण वे विद्यालयी शुल्क, पुस्तकें, वर्दी, भोजन एवं आवागमन पर व्यय करने में असमर्थ रहते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे या तो मजदूरी करने

© FEB 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 8 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I8-1714559

लगते हैं अथवा घरेलू कार्यों में सहयोग देकर परिवार की आय में योगदान देते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से 7–15 वर्ष आयु-समूह के बच्चों में विद्यालय त्याग (ड्रॉपआउट) की प्रवृत्ति को बढ़ाती है।

इन परिस्थितियों के कारण 7–15 वर्ष आयु-समूह में विद्यालय जाने वाले बच्चों का प्रतिशत अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पा रहा है। अतः आवश्यक है कि दरभंगा जिले में शैक्षिक अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की व्यवस्था, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए सहायता योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तथा समुदाय-स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, ताकि सभी बच्चों को शिक्षा से जोड़ा जा सके और विद्यालयी उपस्थिति में स्थायी सुधार लाया जा सके।

भौगोलिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति तथा शैक्षिक अवसंरचना की कमी जैसी बाधाएँ बच्चों को शिक्षा प्रणाली से जोड़ने में निरंतर चुनौती बनी हुई हैं। दरभंगा एक प्रधानतः ग्रामीण जिला है, जहाँ अनेक बाहरी और भीतरी इलाकों में सड़क, परिवहन तथा विद्यालय सुविधाओं का अभाव स्पष्ट रूप से दिखता है। कई ग्रामीण और आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विद्यालय भवन की कमी, खराब सड़कें तथा परिवहन की समस्या बच्चे के नियमित विद्यालय जाने को कठिन बना देती हैं।

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कराने के प्रयासों के बावजूद दरभंगा के कई गाँवों में इन्फ्रास्ट्रक्चर, शिक्षण सामग्री, पर्याप्त शिक्षकों, पानी और शैक्षिक संसाधनों की कमी इस क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा प्राप्ति को प्रभावित करती है। बहुत से छोटे-छोटे टोले हैं जहाँ कभी-कभी विद्यालय उपलब्ध तो हैं, पर वे अक्षम और अविकसित हैं — कक्षा कक्षों की कमी, डेस्क-बेंच का अभाव, ब्लैकबोर्ड/चॉक की अनुपलब्धता तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं का अभाव बच्चों के सीखने के अनुभव को कमजोर कर देता है।

दरभंगा में प्रशिक्षित तथा नियमित उपस्थित शिक्षकों की भी भारी कमी है। जिला स्तर पर नियुक्ति पाकर अधिकांश शिक्षक मुख्यालय और आसपास के हल्की-सुविधायुक्त क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं, जिससे ग्रामीण और दूरदराज के विद्यालयों में शिक्षकों की अनुपस्थिति अधिक रहती है। इससे कक्षा का माहौल असामान्य और अप्रेरक बन जाता है, जो बच्चों को विद्यालय में निरंतर बने रहने से रोकता है।

सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ भी बच्चों के विद्यालय छोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दरभंगा जिले में कई परिवार गरीब हैं और वे बच्चों को रोज़गार के लिए श्रम करना प्रेरित करते हैं। कई परिवारों में बच्चे घरेलू कार्यों में लगे रहते हैं या मजदूरी करके परिवार की आय बढ़ाने में योगदान देते हैं, जिससे वे विद्यालय छोड़ देते हैं। आर्थिक दवाब के कारण स्कूल की फीस, किताबें, वर्दी, खाने-पीने और आने-जाने के खर्च जैसी चीज़ों पर खर्च करना उनके लिए कठिन होता है। सामाजिक संरचना तथा पारिवारिक दृष्टिकोण भी शिक्षा में बाधक हैं। कुछ परिवारों में शिक्षण के लाभ के प्रति जागरूकता कम है और शिक्षा को जीवन के प्राथमिक कार्य से कम महत्व दिया जाता है, जिससे बच्चे जल्दी ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। परिणाम यह है कि 7–15 वर्ष आयु-समूह के बच्चों में ड्रॉप-आउट दर अपेक्षाकृत अधिक है और स्कूल तक पहुँचने वाले बच्चों का प्रतिशत अपेक्षित नहीं है।

इसके परिणामस्वरूप, दरभंगा जिले में कई विद्यार्थी प्रारंभिक शिक्षा तो प्राप्त करते हैं, परंतु हायर सेकेंडरी स्तर तक पहुँचने में कठिनाई महसूस करते हैं। जो छात्र उच्च कक्षाओं तक पढ़ते भी हैं, उनमें से भी बहुत कम उच्च शिक्षा संस्थानों तक पहुँच पाते हैं।

सरकार ने छात्रों को जो सहायता प्रदान की है — जैसे मुफ़्त किताबें, स्टेशनरी, छात्रवृत्ति, परीक्षा शुल्क प्रतिपूर्ति और मध्याह्न भोजन — उसका प्रभाव सीमित रहा है क्योंकि मूल कारण — भौगोलिक कठिनाई, अवसंरचना की कमी, शिक्षण गुणवत्ता और आर्थिक बाधाएँ — जस-के-तस बनी हुई हैं।

निष्कर्ष :दरभंगा जिले में "माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर आकांक्षा का प्रभाव" के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केवल विद्यालयों की उपलब्धता शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धि सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण तथा सबसे महत्वपूर्ण उनकी शैक्षिक आकांक्षा से गहराई से जुड़ी हुई है।

दरभंगा एक मुख्यतः ग्रामीण जिला है, जहाँ बड़ी आबादी आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से संबंधित है। ऐसे परिवारों में शिक्षा को अक्सर आजीविका की तात्कालिक आवश्यकताओं के मुकाबले कम प्राथमिकता दी जाती है।

परिणामस्वरूप बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा सीमित रह जाती है। जिन छात्रों की आकांक्षा उच्च पाई गई, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत बेहतर रही। इसके विपरीत जिन छात्रों की आकांक्षा निम्न स्तर की थी, उनकी उपलब्धि भी कम पाई गई। इससे यह स्पष्ट होता है कि आकांक्षा केवल एक मनोवैज्ञानिक तत्व नहीं, बल्कि शैक्षिक सफलता का महत्वपूर्ण निर्धारक है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ—जैसे निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, छात्रवृत्ति, मध्याह्न भोजन तथा साइकिल योजना—नामांकन बढ़ाने में सहायक तो रही हैं, परंतु विद्यालयों का समग्र वातावरण, शिक्षण की गुणवत्ता तथा छात्रों के साथ व्यवहार में अपेक्षित संवेदनशीलता का अभाव अभी भी चुनौती बना हुआ है। विशेषकर प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए विद्यालयी प्रणाली में सम्मानजनक और प्रेरक वातावरण का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। यदि छात्र स्वयं को विद्यालय में स्वीकार्य और समर्थित महसूस नहीं करते, तो उनकी आकांक्षा का स्तर गिरता है और वे अपनी पूर्ण क्षमता तक नहीं पहुँच पाते।

अध्ययन यह भी संकेत देता है कि शिक्षक, अभिभावक तथा समुदाय की भूमिका छात्रों की आकांक्षा निर्माण में निर्णायक होती है। प्रेरक शिक्षण, मार्गदर्शन, कैरियर परामर्श तथा सकारात्मक संवाद छात्रों में उच्च लक्ष्य निर्धारित करने की भावना विकसित करते हैं। इसके विपरीत भेदभावपूर्ण व्यवहार, संसाधनों की कमी और अनियमित शिक्षण व्यवस्था उनकी शैक्षिक प्रगति को बाधित करती है।

इसलिए दरभंगा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सुधारने के लिए केवल भौतिक संसाधनों की वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी। आवश्यक है कि—

1. विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण एवं संवेदनशील शिक्षण वातावरण विकसित किया जाए।
2. छात्रों में उच्च शैक्षिक आकांक्षा विकसित करने हेतु परामर्श एवं प्रेरक कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
3. आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सशक्त बनाकर शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए।
4. शिक्षक एवं प्रशासनिक तंत्र को अधिक उत्तरदायी एवं संवेदनशील बनाया जाए।

शिक्षा मानव संसाधन विकास का आधार है और किसी भी जिले के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य तत्व है। साक्षरता और शैक्षिक उपलब्धि में सुधार से न केवल व्यक्तिगत जीवन स्तर ऊँचा उठता है, बल्कि समाज में सामाजिक न्याय, आर्थिक स्थिरता और समग्र प्रगति को भी बढ़ावा मिलता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दरभंगा जिले में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उनकी आकांक्षा को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है। जब तक विद्यालयी प्रणाली, समुदाय और शासन मिलकर छात्रों के लिए प्रेरक, सम्मानजनक और अवसरपूर्ण वातावरण तैयार नहीं करेंगे, तब तक अपेक्षित शैक्षिक परिवर्तन संभव नहीं होगा।

संदर्भ

शीर्षक: *"माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर आकांक्षा का प्रभाव: दरभंगा, बिहार के संदर्भ में"*

[1] भारत सरकार की विभिन्न रिपोर्टों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में आवंटित धनराशि का पूर्ण उपयोग न होना शैक्षिक पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण है। वित्तीय संसाधनों के समुचित उपयोग के अभाव में विद्यालयी अवसंरचना, शिक्षकों की नियुक्ति तथा गुणवत्ता सुधार के प्रयास प्रभावित होते हैं।

[2] भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(क) के अंतर्गत 6–14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (RTE Act) के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है।

[3] जनगणना 2001 एवं 2011 के अनुसार बिहार की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम रही है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर अपेक्षाकृत निम्न पाई गई है। दरभंगा जैसे जिलों में सामाजिक-आर्थिक कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। स्रोत: भारत की जनगणना, रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त, भारत।

[4] विभिन्न शोध अध्ययनों में यह पाया गया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उनकी उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। उच्च आकांक्षा रखने वाले

छात्र बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जबकि निम्न आकांक्षा उपलब्धि को सीमित करती है।

[5] बिहार सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ—जैसे साइकिल योजना, पोशाक योजना, छात्रवृत्ति योजना एवं मध्याह्न भोजन योजना—विद्यालय में नामांकन और उपस्थिति बढ़ाने में सहायक रही हैं, परंतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षण वातावरण की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।
स्रोत: शिक्षा विभाग, बिहार सरकार।

[6] राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की रिपोर्टों में यह उल्लेख किया गया है कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षक-छात्र संबंध और अभिभावकीय सहयोग छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं।

[7] सर्वेक्षण रिपोर्टों से यह भी स्पष्ट होता है कि आर्थिक कारणों से अनेक छात्र माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई छोड़ देते हैं। परिवार की आय में योगदान देने का दबाव उनकी शैक्षिक निरंतरता को प्रभावित करता है।

[8] प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों के संदर्भ में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि यदि विद्यालय में प्रेरक एवं सम्मानजनक वातावरण उपलब्ध हो, तो उनकी आकांक्षा और उपलब्धि दोनों में वृद्धि होती है।

[9] मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में किए गए शोध यह दर्शाते हैं कि शिक्षा सामाजिक-आर्थिक विकास, जन्म दर में कमी, शिशु मृत्यु दर में गिरावट तथा जीवन स्तर में सुधार से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है।

[10] माध्यमिक शिक्षा पर केंद्रित विभिन्न शैक्षिक अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों की आकांक्षा को सुदृढ़ करने के लिए कैरियर परामर्श, मार्गदर्शन कार्यक्रम और शिक्षक-प्रेरणा अत्यंत आवश्यक हैं।

[11] बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (BEP) तथा सर्व शिक्षा अभियान (SSA) की पहलें प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण रही हैं, किंतु माध्यमिक स्तर पर गुणवत्ता सुधार के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

[12] शिक्षा के क्षेत्र में नीतिगत व प्रशासनिक प्रतिबद्धता, संसाधनों का समुचित उपयोग और संवेदनशील शिक्षक-तंत्र छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

[13] विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह प्रमाणित हुआ है कि छात्र की आकांक्षा, आत्म-प्रेरणा और लक्ष्य निर्धारण की क्षमता उसकी शैक्षिक सफलता के प्रमुख मनोवैज्ञानिक घटक हैं।